

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लत्तुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये पञ्चचत्वारिंशं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীযে পঞ্চচত্রারিংশং দশকম্ ॥

কৃষ্ণস্য বালক্রীডারর্ণনম্

অযি সবল মুরারে পাণিজানুপ্রচারৈঃ

কিমপি ভরনভাগান্ ভুষযন্তৌ ভরন্তৌ।

চলিতচরণকঞ্জৌ মঞ্জুমঞ্জীরশিঞ্জা -

শ্ররণকুতুকভাজৌ চেরতুশচারুরেগাৎ ॥ 45.1 ॥

মৃদু মৃদু রিহসন্তারুন্মিষদন্তরন্তৌ

রদনপতিতকেশৌ দৃশ্যপাদাজদেশৌ।

ভুজগলিতকরান্তর্যালগৎ কঙ্কণাক্ষৌ

মতিমহরতমুচ্চৈঃ পশ্যতাং রিশ্রনূণাম্ ॥ 45.2 ॥

অনুসরতি জনৌঘে কৌতুকর্যাকুলাক্ষে

কিমপি কৃতনিদাদং র্যাহসন্তৌ দ্ররন্তৌ।

রলিতরদনপদ্মং পৃষ্ঠতো দত্তদৃষ্টী

কিমির ন রিদধাথে কৌতুকং রাসুদের ॥ 45.3 ॥

দ্রুতগতিষু পতন্তারুথিতৌ লিপ্তপঙ্কৌ

দিরি মুনিভিরপঙ্কৈঃ সস্মিতং রন্দ্যমানৌ।

দ্রুতমথ জননীভ্যাং সানুকম্পং গৃহীতৌ

মুহুরপি পরিরক্কৌ দ্রাণ্যরাং চুষ্ণিতৌ চ ॥ 45.4 ॥

স্মুতকুচভরমঙ্কৈ ধারযন্তী ভরন্তং

তরলমতি যশোদা স্তন্যদা ধন্যধন্যা।

कपटपशुप मध्ये मुक्कहासाक्कुरं ते
दशनमुकुलहृद्यं रीम्क्य रक्त्रं जहर्ष ॥ 45.5 ॥

तदनु चरणचारी दारकैस्साकमारा -
निलयततिषु खेलन् बालचापल्यशाली।
भरनशुकरिलालान् रंसकांश्चानुधारन्
कथमपि कृतहासैर्गोपकैर्रारितोहडूः ॥ 45.6 ॥

हलधरसहितस्त्रुं यत्र यत्रोपयातो
रिरशपतितनेत्रास्तत्र तत्रैर गोप्यः।
रिगलितगृहकृत्या रिस्मृतापत्यडृत्या
मुरहर मुहरतयन्ताकुला नित्यमासन् ॥ 45.7 ॥

प्रतिनरनरनीतं गोपिकादन्तमिच्छन्
कलपदमुपगायन् कोमलं क्लापि नृत्यन्।
सदययुरतिलोकैरर्पितं सर्पिरश्वन्
क्लचन नररिपक्कं दुक्कमप्यापिवस्त्रुम् ॥ 45.8 ॥

मम खलु बलिगेहे याचनं जातमास्ता -
मिह पुनरवलानामग्रतो नैर कुर्रे।
इति रिहितमतिः किं देर सन्त्यज्य याच्छ्रां
दधिघृतमहरस्त्रुं चारुणा चोरणेन ॥ 45.9 ॥

तर दधिघृतमोषे घोषयोषाजनाना -
मभजत हृदि रोषो नारकाशं न शोकः।
हृदयमपि मुषिंरा हर्षसिक्को न्यधास्त्रुं
स मम शमय रोगान् रातगेहाधिनाथ ॥ 45.10 ॥

शाखाग्रेहथ रिधुं रिलोक्य फलमित्यथां च तातं मुहः
सम्प्रार्थ्याथ तदा तदीय रचसा प्रोत्क्षिप्त बाहौ वरधि।
चित्रं देव शशी स ते करमगां किं ब्रूमहे सम्पत -
ज्ज्यातिर्मण्डलपुरिताखिलरपुः प्रागा रिराद्रूपताम् ॥ 45.11 ॥

किं किं वतेदमिति सद्भ्रम भाजमेनं
ब्रह्मार्णवे ऋणममुं परिमज्य तातम्।
मायां पुनस्तनयमोहमयीं रितन्त्र -
न्नानन्दचिन्मय जगन्मय पाहि रोगां ॥ 45.12 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये पञ्चचत्वारिंशत् दशकं समाप्तम् ॥